8

आतम अनुभव आवै...

आतम अनुभव आवै, जब निज आतम अनुभव आवै।।
तब और कछू न सुहावै, जब निज आतम अनुभव आवै।।टेक।।
जिन आज्ञा अनुसार प्रथम ही तत्त्व प्रतीति अनावै।
वर्णादिक रागादिक तें, निज चिन्ह भिन्न फिर ध्यावै।।1।।
जब निज आतम अनुभव आवै....
मतिज्ञान फरसादि विषय तज, आतम सम्मुख धावै।
नय, प्रमाण, निक्षेप, सकल, श्रुतज्ञान, विकल्प नसावै।।
जब निज आतम अनुभव आवै....
चिद्ऽहं, शुद्धोऽहं इत्यादिक, आप माँहि बुधि आवै।।
तन पै वज्रपात होते हू, नेक न चित्त डुलावै।।2।।
जब निज आतम अनुभव आवै....
स्व संवेद आनन्द बढ़ै अति, वचन कह्यो नहिं जावै।
दर्शन ज्ञान चरन तीनों विच, इक स्वरूप ठहरावै।।3।।
जब निज आतम अनुभव आवै....
चित् कर्ता, चित् कर्म भाव, चित् परिणति क्रिया कहावै।
साधन, साध्य, ध्यान, ध्येयादिक, भेद कछू न दिखावै।।4।।
जब निज आतम अनुभव आवै....
आत्म प्रदेश अदृष्ट तदपि, रस स्वाद प्रगट दरसावै।
ज्यों मिश्री दीसत न अन्ध को, सपरस मिष्ट चखावै।।5।।
जब निज आतम अनुभव आवै.....
जिन जीवन के संसृति, पारावार पार निकटावै।
'भागचन्द' ते सार अमोलक, परम रतन वर पावै।।6।।
जब निज आतम अनुभव आवै.....

जब अपनी आत्मा का अनुभव हो जाता है तब और कुछ अच्छा नहीं लगता।।टेक।।

जिनेन्द्र भगवान की वाणी के अनुसार सर्वप्रथम तत्त्वों के प्रति श्रद्धा होती है तब राग और वर्ण आदि से अपनी आत्मा को भिन्न पहचानकर उसका ध्यान करता है।।१।।

मति ज्ञान, स्पर्श आदि विषयों को त्यागकर आत्मा की प्राप्ति का पुरुषार्थ करता है। नय, प्रमाण, निपेक्ष और श्रुत ज्ञान के समस्त विकल्पों का नाश करता है।।२।।

मैं चैतन्य हूँ, मैं शुद्ध हूँ इत्यादि रूप से आत्मा में ज्ञान स्वयं लीन हो जाता है, तब यदि शरीर पर व्रजपात भी हो जाये तो भी उसका मन रंच मात्र भी चलायमान नहीं होता।।३।।

अपनी आत्मा की अनुभूति का आनंद बहुत बढ जाता है जिसका वर्णन वाणी से नहीं कहा सकता। दर्शन, ज्ञान, चारित्र इन तीनों के भेद समाप्त होकर एकरूपता हो जाती है।।४।।

आत्मानुभव के काल में चैतन्य ही कर्ता, कर्म तथा उसी की परिणति क्रिया कहलाती है, उस समय साध्य-साधना, ध्यान-ध्याता आदि किसी भी प्रकार भेद नहीं रहता ।।५।।

यद्यपि आत्मानुभव के समय आत्मा के प्रदेश दिखाई नहीं पड़ते परन्तु आत्मा के अनुभव का स्वाद प्रत्यक्ष वेदन में आता है, जिस प्रकार अन्धे को मिसरी दिखाई नहीं देती परन्तु उसकी मिठास का अनुभव होता है।।६।।

कविवर भागचन्दजी कहते हैं कि आत्मानुभवी जीवों के संसार भवसागर का किनारा निकट आ जाता है। अनुभव रूपी परम रत्न की प्राप्ति करने वाले के लिये यह अमूल्य जीवन का सार है।।७।।